सारा जोसेफ का "ओथप्पु" और मृदुला गर्ग का "कठगुलाब" : एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. के. भार्गवन
सह-प्राध्यापक
शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, कोझिकोड, केरल

लेखिकाओं का संक्षिप्त परिचय:-सारा जोसेफ समकालीन मलयालम साहित्य की चर्चित नारीवादी लेखिका हैं। उनके लेखन में सामाजिक न्याय, स्त्री-स्वतंत्रता और धर्म-संस्था की आलोचना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वे स्त्री को केवल पीड़िता नहीं, बल्कि संघर्षशील और जागरूक व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करती हैं। दूसरी ओर मृदुला गर्ग हिंदी साहित्य की प्रमुख उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यास आधुनिक स्त्री के मनोविज्ञान, संबंधों की जटिलता और समाज के दोहरे मापदंडों पर आधारित हैं। मृदुला गर्ग स्त्री को परंपरागत भूमिका से बाहर निकालकर आत्मनिर्णय करने वाली स्त्री के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

समकालीन भारतीय साहित्य में स्त्री-विमर्श ने एक सशक्त आंदोलन का रूप ग्रहण किया है। हिंदी और मलयालम साहित्य में अनेक ऐसी लेखिकाएँ हैं जिन्होंने स्त्री के जीवन, संघर्ष, पहचान और स्वतंत्रता को केंद्र में रखकर रचनाएँ की हैं। मलयालम साहित्य की प्रमुख लेखिका सारा जोसेफ और हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका मृदुला गर्ग इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण नाम हैं। सारा जोसेफ का उपन्यास "ओथप्पु" तथा मृदुला गर्ग का उपन्यास "कठगुलाब" दोनों ही स्त्री की अस्मिता, सामाजिक-धार्मिक बंधनों और आत्म-निर्णय की समस्या को प्रस्तुत करते हैं। इन दोनों उपन्यासों में स्त्री जीवन की जटिलताओं का अत्यंत साहसिक और यथार्थवादी चित्रण मिलता है।

सारा जोसेफ मलयालम साहित्य की प्रमुख समकालीन लेखिका हैं, जिनकी पहचान विशेष रूप से स्त्री-विमर्श और सामाजिक चेतना से जुड़ी रचनाओं के लिए है। उनके उपन्यासों में स्त्री जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और सामाजिक-धार्मिक बंधनों का अत्यंत सशक्त चित्रण मिलता है। वे अपने लेखन में स्त्री को केवल पीड़िता के रूप में नहीं प्रस्तुत करतीं, बल्कि उसे जागरूक, संघर्षशील और आत्मनिर्णय करने वाली व्यक्तित्व के रूप में सामने लाती हैं। उनकी रचनाओं में समाज की पितृसत्तात्मक व्यवस्था, नैतिकता के नाम पर होने वाला शोषण, वर्ग-भेद और अन्याय के प्रति गहरी आलोचनात्मक दृष्टि दिखाई देती है।

सारा जोसेफ की उपन्यास-कला की सबसे बड़ी विशेषता उनकी यथार्थवादी दृष्टि और संवेदनशील शैली है। वे कथा में घटनाओं से अधिक मनोवैज्ञानिक गहराई और सामाजिक संदर्भ को महत्व देती हैं। उनकी भाषा प्रभावशाली, धारदार और प्रतीकात्मक होती है, जिससे पाठक के मन पर गहरा असर पड़ता है। उनके उपन्यासों में प्रतिरोध की चेतना स्पष्ट रूप से उभरती है, जो समाज की रूढ़ियों को तोड़ने और नए विचारों को स्थापित करने का प्रयास करती है। इस कारण सारा जोसेफ के उपन्यास समकालीन मलयालम साहित्य में स्त्री अस्मिता और सामाजिक परिवर्तन की सशक्त आवाज़ माने जाते हैं।मृदुला गर्ग समकालीन हिंदी साहित्य की एक प्रमुख और विशिष्ट उपन्यासकार हैं। उनका लेखन मुख्यतः आधुनिक जीवन की जटिलताओं, स्त्री-पुरुष संबंधों, मानसिक द्वंद्व और सामाजिक रूढ़ियों पर केंद्रित है। वे हिंदी उपन्यास में नई सोच और नई दृष्टि लेकर आईं, जिसमें स्त्री को परंपरागत सीमाओं में बाँधकर नहीं बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मृदुला गर्ग के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन की सच्चाइयाँ, व्यक्ति की आंतरिक उलझनें और सामाजिक दबावों के बीच अस्तित्व की तलाश प्रमुख रूप से दिखाई देती है।मृदुला गर्ग के प्रमुख उपन्यासों में "कठगुलाब", "चिटकोबरा", "अनित्या" तथा "मैं और मैं" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

"कठगुलाब" में स्त्री की स्वतंत्रता और उसके निर्णय लेने के अधिकार को केंद्र में रखा गया है, जबकि "चिटकोबरा" मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टि से जीवन-संघर्ष को प्रस्तुत करता है। "अनित्या" में रिश्तों की अस्थिरता और आधुनिक जीवन की अनिश्चितता का चित्रण मिलता है। मृदुला गर्ग की भाषा सहज, विचारप्रधान और विश्लेषणात्मक है, जो पाठक को केवल कहानी नहीं देती बल्कि सोचने के लिए प्रेरित करती है।

उपन्यासों की कथावस्तु का संक्षिप्त परिचय:-सारा जोसेफ का "ओथप्पु" स्त्री जीवन के संघर्ष को धार्मिक एवं सामाजिक ढांचे के भीतर रखकर प्रस्तुत करता है। इसमें स्त्री की स्वतंत्रता और उसकी व्यक्तिगत इच्छा को पाप मानने वाली मानसिकता पर प्रहार किया गया है। यह उपन्यास स्त्री के जीवन में धर्म, समाज और नैतिकता के नाम पर होने वाले शोषण को उजागर करता है।

सारा जोसेफ का उपन्यास *ओथप्पु* स्त्री जीवन के संघर्ष को धार्मिक और सामाजिक संरचनाओं के भीतर गहराई से प्रस्तुत करता है। यह कृति दिखाती है कि किस प्रकार पितृसत्तात्मक व्यवस्था और कठोर धार्मिक अनुशासन स्त्री की स्वतंत्र चेतना, उसकी इच्छाओं और उसकी मानवीय पहचान को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। उपन्यास की नायिका अपने आत्मसम्मान और अस्तित्व की खोज में परंपरागत मान्यताओं से टकराती है, जिससे उसके भीतर आंतरिक द्वंद्व और बाह्य संघर्ष दोनों उत्पन्न होते हैं। "ओथप्पु" केवल एक स्त्री की व्यक्तिगत कथा नहीं, बल्कि उन सभी स्त्रियों की सामूहिक पीड़ा और प्रतिरोध का प्रतीक है जो धर्म और समाज द्वारा निर्धारित सीमाओं को चुनौती देकर अपने स्वत्व को स्थापित करना चाहती हैं। इस प्रकार यह रचना स्त्री मुक्ति, आत्मनिर्णय और सामाजिक परिवर्तन की सशक्त अभिव्यक्ति बनकर उभरती है।

मृदुला गर्ग का "कठगुलाब" आधुनिक स्त्री की मानसिकता और उसकी स्वतंत्र पहचान की खोज को प्रस्तुत करता है। इसमें स्त्री के भीतर के द्वंद्व, रिश्तों की उलझन और सामाजिक दबावों का चित्रण है। यह उपन्यास स्त्री को स्वतंत्र निर्णय लेने वाली, आत्मविश्वासी और अपनी पहचान बनाने वाली स्त्री के रूप में दिखाता है। मृदुला गर्ग का उपन्यास *कठगुलाब* आधुनिक स्त्री की मानसिक जटिलताओं और उसकी स्वतंत्र पहचान की खोज को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करता है। यह कृति स्त्री को पारंपरिक भूमिकाओं में बंधी हुई न दिखाकर एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उभारती है जो अपने निर्णय स्वयं लेना चाहती है और भावनात्मक-बौद्धिक स्तर पर आत्मनिर्भर होना चाहती है। उपन्यास की नायिका के माध्यम से लेखिका प्रेम, संबंध, विवाह और समाज के दबावों के बीच स्त्री के आंतरिक संघर्षों को उजागर करती हैं। *कठगुलाब* में स्त्री की चेतना केवल विद्रोह तक सीमित नहीं रहती, बल्कि आत्मविश्लेषण और आत्मस्वीकृति की प्रक्रिया से गुजरते हुए एक नई पहचान गढ़ती है। इस प्रकार यह उपन्यास आधुनिक स्त्री के बदलते

दृष्टिकोण और उसकी स्वायत्त अस्मिता का सशक्त दस्तावेज बन जाता है।

स्त्री अस्मिता और स्वतंत्रता का प्रश्न:-दोनों उपन्यासों में स्त्री अस्मिता का प्रश्न केंद्रीय रूप में उपस्थित है। "ओथप्पु" में स्त्री की अस्मिता को धार्मिक और सामाजिक नैतिकता के कठोर नियमों के द्वारा दबाया जाता है। समाज स्त्री के जीवन को नियंत्रित करना चाहता है और उसे अपनी इच्छाओं के अनुसार जीने का अधिकार नहीं देता। यहाँ स्त्री की स्वतंत्रता को अपराध के समान माना गया है। "कठगुलाब" में भी स्त्री अस्मिता का संघर्ष दिखाई देता है, परंतु इसका स्वर अधिक आधुनिक और मनोवैज्ञानिक है। मृदुला गर्ग स्त्री की स्वतंत्रता को केवल सामाजिक संघर्ष के रूप में नहीं, बल्कि आत्मिक और मानसिक मुक्ति के रूप में प्रस्तुत करती हैं। स्त्री यहाँ अपने निर्णय स्वयं लेना चाहती है और समाज के दबावों से मुक्त होकर जीना चाहती है।

धर्म और समाज की भूमिका:-"ओथप्पु" उपन्यास में धर्म का प्रभाव बहुत गहरा है। धर्म संस्था स्त्री के जीवन को नियंत्रित करने का माध्यम बन जाती है। समाज धर्म के नाम पर स्त्री की स्वतंत्रता को सीमित करता है और उसे परंपराओं की बेड़ियों में बांधकर रखता है। उपन्यास धर्म के पाखंड और उसके स्त्री विरोधी स्वरूप को उजागर करता है।"कठगुलाब" में धर्म की भूमिका उतनी प्रत्यक्ष नहीं है, लेकिन समाज की रूढ़ मानसिकता और पारिवारिक व्यवस्था स्त्री को दबाने का काम करती है। यहाँ सामाजिक प्रतिष्ठा, मर्यादा और रिश्तों के नाम पर स्त्री को सीमाओं में बाँधा जाता है। मृदुला गर्ग आधुनिक समाज के भीतर छिपी हुई उसी पितृसत्तात्मक मानसिकता पर चोट करती हैं।

पितृसत्ता और स्त्री शोषण:-दोनों उपन्यासों में पितृसत्ता एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आती है। "ओथप्पु" में पितृसत्ता धर्म और सामाजिक नैतिकता के रूप में दिखाई देती है। पुरुष प्रधान व्यवस्था स्त्री के जीवन के हर निर्णय पर अधिकार जमाना चाहती है।

"कठगुलाब" में पितृसत्ता अधिक सूक्ष्म रूप में उपस्थित है। यहाँ स्त्री को आधुनिकता के नाम पर स्वतंत्र तो दिखाया जाता है, लेकिन वास्तव में उसके निर्णयों को समाज स्वीकार नहीं करता। यह उपन्यास दिखाता है कि आधुनिक समाज में भी स्त्री को मानसिक रूप से नियंत्रित किया जाता है।

स्त्री पात्रों की मनोवैज्ञानिक स्थिति:-"ओथप्पु" में स्त्री पात्रों की स्थिति संघर्षशील है। वे सामाजिक-धार्मिक नियमों से टकराती हैं और अपनी अस्मिता की रक्षा करना चाहती हैं। उनके भीतर विद्रोह की भावना स्पष्ट है।"कठगुलाब" में स्त्री पात्रों का संघर्ष अधिक मानसिक और भावनात्मक है। वे रिश्तों के भीतर अपने अस्तित्व की तलाश करती हैं। यहाँ स्त्री के मन के भीतर चलने वाली जटिलता और आत्मसंघर्ष का चित्रण अधिक गहराई से मिलता है।

भाषा और शैली की तुलना:-सारा जोसेफ की शैली में तीखापन और प्रतिरोध का स्वर अधिक दिखाई देता है। उनका लेखन सामाजिक सच्चाइयों को स्पष्ट रूप से उजागर करता है। भाषा में एक तरह की धार और आंदोलनकारी चेतना मौजूद रहती है।

मृदुला गर्ग की शैली अधिक मनोवैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक है। उनकी भाषा गंभीर, विचारप्रधान और आधुनिक है। वे रिश्तों और मन के भीतर की परतों को खोलने में अधिक रुचि रखती हैं। उनका लेखन पाठक को सोचने और आत्मचिंतन करने पर मजबूर करता है।

समकालीन साहित्य में महत्व:-"ओथप्पु" और "कठगुलाब" दोनों उपन्यास समकालीन स्त्री विमर्श के महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। "ओथप्पु" धर्म और समाज की कठोरता के विरुद्ध स्त्री संघर्ष को दर्शाता है, वहीं "कठगुलाब" आधुनिक स्त्री के भीतर चलने वाले आत्मसंघर्ष और स्वतंत्रता की खोज को उजागर करता है। दोनों उपन्यास यह सिद्ध करते हैं कि स्त्री का संघर्ष केवल बाहरी समाज से नहीं, बल्कि उसकी मानसिक स्थिति और रिश्तों की जटिलता से भी जुड़ा हुआ है।

निष्कर्ष:-

अतः कहा जा सकता है कि सारा जोसेफ का "ओथप्पु" और मृदुला गर्ग का "कठगुलाब" दोनों ही उपन्यास स्त्री अस्मिता, स्वतंत्रता और समाज के पितृसत्तात्मक ढांचे पर गहरी चोट करते हैं। "ओथप्पु" जहाँ धर्म-संस्था और समाज की कठोरता को उजागर करता है, वहीं "कठगुलाब" आधुनिक समाज में स्त्री की मानसिक और सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। दोनों उपन्यास स्त्री के अधिकार, उसकी पहचान और उसके संघर्ष को सशक्त स्वर प्रदान करते हैं। इस प्रकार ये दोनों उपन्यास हिंदी और मलयालम साहित्य में स्त्री-विमर्श की महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं और समकालीन समाज को एक नई सोच प्रदान करते हैं।

****